प्रश्नावली विश्लेषण -:

प्रस्तुत शोध में एक निश्चित बिन्दु पर पहुँचने के लिए प्रश्नावली का उपयोग किया गया। प्रश्नावली का पूरा प्रारूप प्राइम टाइम के श्रोताओं को ध्यान में रखते हुये तैयार किया गया था। प्रस्तुत प्रश्नावली में कुल 11 प्रश्न पूछे गए जिसका सीधा मकसद शोध प्रश्न की उस अंतिम बिन्दु तक पहुँचना था जहां से शोध निष्कर्षतम बिन्दु के करीब आ सके। प्रश्नावली सिर्फ उन्हीं श्रोताओं से भरवाया गया जो प्राइम टाइम देखते हैं, और देखते ही नहीं बल्कि शोध के केंद्रीय संदर्भ रवीश कुमार और पुण्य प्रसून वाजपेयी के प्राइम टाइम को देखते और सुनते हों। इसके लिए शोध क्षेत्र जो की दिल्ली था, में कुल 200 लोगों पर पायलट स्टडी की गई। इसके अंतर्गत शोध क्षेत्र के लोगों से प्रश्नावली भरवा कर उन 100 श्रोताओं का चयन करना था जो कार्यक्रम से जुड़े थे, यानि 'प्राइम टाइम विथ रवीश कुमार' और '10तक' कार्यक्रम देखते हैं। पूर्व प्रश्नावली शोध के पश्चात चयनित श्रोताओं से शोध प्रश्नावली भरवाई गई जो शोध क्षेत्र (दिल्ली) तक ही सीमित थी। प्रश्नावली बोगार्ड्स स्केल पर आधारित थी। शोध प्रश्नावली में समाज के सभी तबके को उचित प्रतिनिधित्व मिले इसके लिए उम्र और लिंग के आधार पर उत्तरदाता का चयन किया गया। कुल उत्तरदाता में से उम्र के आधार पर पाँच ग्रुप बनाए गए। सभी ग्रुप में 20-20 उत्तरदाता का चयन किया गया। पहला ग्रुप 20-30, दूसरा 31-40, तीसरा 41-50, चौथा 51-60 और पांचवा ग्रुप 61-70 के उम्र का था। सभी ग्रुप में पुरुष और महिला के समान प्रतिनिधित्व का ध्यान रखा गया। प्रत्येक ग्रुप के 20 उत्तरदाता में 10 पुरुष तो 10 महिला को स्थान दिया गया। प्रश्नावली में कुल पूछे गए सवाल में से दस सवाल ओब्जेक्टिव था तो वहीं एक जो अंतिम सवाल भी था वो सब्जेक्टिव पूछा गया।

आंकड़ा संकलन पद्धति (Method of Data Collection)

प्रस्तुत शोध के अंतर्गत आंकड़ा संकलन के लिए कई विधियों का प्रयोग किया गया है। जिससे शोध की गुणवत्ता बेहतर से बेहतर बन सकें। प्राथमिक दत्तों (Primary Data) के रूप में अनुप्रयुक्त डाटा मूलतः सर्वे आधारित है जहाँ सम्बंधित सूचनादाताओं से संपर्क स्थापित कर उनसे जानकारी प्राप्त की गई है एवं सम्बंधित संकलन की गई जानकारी की विश्वसनीयता की पुष्टि की गई है।

वहीं द्वितीयक तथ्यों के रूप में प्रकाशित एवं अप्रकाशित तथ्यों के साथ इन्टरनेट पर उपलब्ध सामग्री को भी संकलित किया गया है। जिससे अलग अलग पहलुओं के विवेचन को विमर्श एवं विश्लेषण रूप में व्याख्यायित किया जा सके।

आंकड़ा संकलन की पद्धति में मुख्य रूप से प्रश्नावली, साक्षात्कार एवं व्यक्तिगत नोट्स शामिल है। जिसके आधार पर तथ्यों को प्रक्रियागत विश्लेषण एवं निर्वचन किया गया है।

आंकडों का प्रक्रियाकरण (Processing of Data)

आंकड़ों के प्रक्रियाकरण के अंतर्गत प्राइम टाइम से संबंधित डाटा की सार्थकता को जाँचने की कोशिश की गई है कि आखिर जो उपलब्ध सामाग्री है उसका शोध से सहसंबंध है भी की नहीं या उसकी उपयुक्तता एवं वैधता प्राइम टाइम के विमर्श एवं विश्लेषण को आवश्यकतानुसार प्रस्तुत करता है कि नहीं। साथ ही संकलन की गई सामाग्री में से अपने शोध के अनुरूप संकलन सामग्री का संपादन कर, प्रत्येक अध्याय एवं विषय अनुसार उनका वर्गीकरण किया गया है ताकि डाटा स्पष्टतः प्रस्तुत होकर शोध की गुणवत्ता को बढ़ा सके।

आंकड़ों का विश्लेषण और सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग (Analysis of Data & Use of Statistical Methods)

संकलित सभी महत्वपूर्ण डाटा को प्राइम टाइम से संबंधित उद्देश्यों के अनुसार विश्लेषण किया गया है। जिसमें प्राइम टाइम से संबंधित संकलित सामग्री शोध के विभिन्न चरों को स्पष्ट कर उद्देश्यों की पूर्ति करता है और शोध सम्बंधित प्रश्नों के उत्तर प्राप्त कर निष्कर्ष तक पहुँचने में मदद करता है। आंकड़ों का विश्लेषण प्रारंभिक एवं द्वितीय प्रणाली पर निर्भर करता है इसलिए प्रारंभिक तौर पर अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए व्यक्तिगत नोट्स का भी इस्तेमाल करते हुए महतवपूर्ण आंकड़ों को विश्लेषित किया गया है। जबकि द्वितीय प्रणाली के तौर पर प्रश्नावली से प्राप्त आंकड़ों को 'एसपीएसएस' (SPSS) सॉफ्टवेयर में भरकर उपकल्पना एवं निष्कर्ष तक पहुंचाया गया है, जो सारणीयन, आरेखीय प्रदर्शन और ची-स्क्वायर टेस्ट (Chi-square test) के द्वारा प्रदर्शित किया गया है।

ची-स्क्वायर टेस्ट (Chi-square Test) मुख्य रूप से सांख्यिकीय परीक्षा है, जिसमें हम अपने प्राकल्पना के अनुसार डाटा प्राप्त करने की कोशिश करते है। जिसके पश्चात् 5% सार्थकता के स्तर पर शून्य परिकल्पना का परीक्षण किया जाता है।

- जिसके अनुसार यदि 5% सार्थकता के स्तर पर यदि काई स्क्वायर (X2) का तालिका मूल्य उसके परिकलित मूल्य (काई स्क्वायर ज्ञात मूल्य) से अधिक है तो शून्य परिकल्पना सही होगा और चरों के आपसी गुण स्वतंत्र होगा या इसे इस रूप में भी देखा जा सकता है कि यदि संभाव्यता मान (Probability level) 0.05 यानि P>0.05 से अधिक है तो शून्य परिकल्पना को स्वीकार कर लिया जाएगा। (P>0.05-Accept the Null-Hypothesis).
- वहीं 5% सार्थकता के स्तर पर यदि काई स्क्वायर (X2) का तालिका मूल्य उसके परिकलित मूल्य (काई स्क्वायर ज्ञात मूल्य) से कम है तो शून्य परिकल्पना गलत होगा और चरों के आपसी गुण स्वतंत्र नहीं होकर आपस में या परस्पर संबंधित होगा जिसे इस रूप में भी देखा जा सकता है कि यदि संभाव्यता मान (Probability level) 0.05 यानि P<0.05 से कम या बराबर है तो शून्य परिकल्पना को अस्वीकार कर दिया जाएगा। (P<0.05-Reject the Null-Hypothesis).